भूमिका

मनुस्मृति हिन्दुओं का मुख्य धर्मशास्त्र है। उसको कोई भी हिन्दू अप्रामाणिक नहीं कहसकता है। वेदमें लिखाहै कि मनुजी ने जो कुछ कहा उसे जीवके लिये औषध समझना (यन्मनुरवद त्तद्भेषजम्) और बृहस्पति लिखते हैं कि धर्मशास्त्र रचकोंमें मनुजी सबमें प्रधान और अति मान्य हैं क्योंकि उन्होंने अपने धर्मशास्त्र में संपूर्ण वेदों का तात्पर्य्य लियाहै जो उनके धर्मशास्त्रसे विरुद्ध हो उसे कदापि नहीं मानना।

श्लोक

वेदार्थोपनिबद्धत्वात् प्राधान्यंहिमनोःस्मृतम् ॥
मन्वर्थविपरीतायां सास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥ १ ॥

यवन म्लेच्छ और इंगलण्डीय सुविचक्षण पण्डित भी मानव धर्मशास्त्र को वेद छोड़कर संसार के सारे ग्रन्थों से प्राचीन मानते हैं। और सर विलियम जोन्स साहिव जो सुप्रिमकोर्ट के प्रख्यात जज्जथे इसे किसी समय में यूनान और मिसर देशतक प्रचलित जानते हैं। खेदकी बात है कि हमारे देशवासी हिन्दू कहलाके अपने मानवधर्मशास्त्र को न जानें। और सारे काम उसके विरुद्ध करें। धर्म हिन्दुओं का यह उनके आगे है। अब इसपर चलना न चलना उनके हाथमें है।

जब मैं सरिश्तेतालीम का इन्स्पेक्टर हुआ हुक्म पाया कि लड़कोंको उनकी 'ड्यूटी' अर्थात् उनको क्या करना चाहिये सिखलाओ मैंने यह पुस्तक अपने अफ्सरों के सामने रक्खी खफ़ा हुए फ़र्मानेलगे कि अब क्या गवर्नमेण्ट तुमको तुम्हारी मज़हबी किताबें भी अपना रुपया खर्च करके पढ़ावेगी ? मैंने अर्ज़ किया

कि अंगरेज़ी तर्जमा मौजूदहै एक बार आप आदिसे अंततक देख जावें। जब देख गयेतो कहनेलगे कि यह तो इंजीलका टुकड़ा है और रिपोर्ट करके और मंज़ूरी मंगाके गवर्नमेण्टकी ओरसे छपवाया और तमाम मद्रसों में बटवाया। बस यह तुम हिन्दुओंका धर्म तुम्हारे सामने है। वह धर्म जिसको तुम्हारे पितामह साक्षात् मनुजी महाराज ने बतलाया और जिसको इस कालमें भी सर विलियमजोन्स जिससे बढ़कर कोई ईसाई अंगरेज़ आजतक इस देश में नहीं आया और जिसने एशिआ टिक सुसाइटी काइम की लिखता है—

' A spirit of sublime devotion, of benevolence to mankind and of amiable tenderness to all sentient creatures, pervades the whole work,

लो देखो पढ़ो और इसी के अनुसार चलो चलावो ।

शिवप्रसाद ।

द्वितीय अध्याय

२ (८) प्रतिदिन भोजन का आदर करे और उसकी निन्दा कभी न करे भोजन को देखकर प्रसन्न होवे और हर्ष करे और ऐसा कहे कि हमको यह भोजन नित्य मिला करे ॥ ५४ ॥ ३

(१०) अति भोजन आयुष आरोग्य स्वर्ग पुण्य इन सबों के हित नहीं है और लोक में निन्दित है इसलिये अति भोजन नहीं करना ॥ ५७ ॥

(१४) विषयों से इन्द्रियों को रोके जैसे सारथी कुचाल से घोड़ों को रोकता है ॥ ८८ ॥ ४

(यह असल संस्कृत श्लोक सिर्फ मुकाबले के लिये अगर कभी ज़रूरत पड़े लिखेगये हैं)

(८) पूजयेदशनन्नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन् ।
दृष्ट्वाहृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्चसर्वशः ॥ ५४ ॥

(१०) अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यञ्चातिभोजनम् ।
अपुण्यंलोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥ ५७ ॥

(१४) इन्द्रियाणांविचरतांविषयेष्वपहारिषु ।
संयमे यत्नमातिष्ठेद्विद्वान् यन्तेववाजिनाम् ॥ ८८ ॥

---

१ सर्कारी पाठशाला के धर्म्मशास्त्री प्रख्यात पण्डित गुलज़ारजी के भाषामनुस्मृतिसे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने लिया ।

२ श्लोकों के पहले अंक मानवधर्म्मसार का और अंत में मनुस्मृति का है ।

३ अर्थात् जैसा भोजन मिले वैसाही प्रसन्न होके संतोष के साथ खालेवे यह न कहे और न मनमें लावे कि खानेको अच्छा नहीं मिला अथवा रूखा फीका है ।

४ हम नहीं जानते कि जो लोग हिन्दू कहलाते हैं वे मनुजी के इस वचन पर क्यों नहीं ध्यानदेते ।

(१८) इन्द्रियों के प्रसंग से जीव दोषी होता है और जो इनका निग्रह करे (अर्थात् विषयों में न लगावे) तो जीव सिद्धिको पाताहै ॥ ९३ ॥ १

(१९) जिस वस्तु में मन की इच्छाहै उस वस्तु के मिलने से मन को तृप्तिहो सो कभी नहीं होती जैसे घीको पाके अग्नि बढ़ती ही है ॥ ९४ ॥ २

(२२) जिस का स्वभाव दुष्ट है उसको वेद दान यज्ञ नियम तप ये सबभी सिद्धिको नहीं दे सक्ते ॥ ९७ ॥ ३

(२५) उपाय से मन और सब इन्द्रियों को वश करके जिसमें शरीरको दुख न होने पावे सब अर्थों को सिद्धकरे ॥ १०० ॥

(२६) बिना पूछे कोई बात किसीको न कहना अन्याय से पूछे तौ भी न कहना जानता हुआ भी बुद्धिमान लोक में जड़की नाईं रहे ॥ ११० ॥

---

(१८) इन्द्रियाणाम्प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंशयम् ।
सन्नियम्यतुतान्येव ततः सिद्धिन्नियच्छति ९३ ॥
(१९) नजातुकामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते ९४ ॥
(२२) वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसिच ।
न विप्रभाव दुष्टश्चसिद्धिङ्गच्छन्ति कर्हिचित् ९७ ॥
(२५) वशेकृत्वेन्द्रियग्रामंसंयम्य च मनस्तथा ।
सर्वान्संसाधयेदर्थानाक्षिण्वन योगतस्तनुम् १०० ॥
(२६) नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयान्नचान्यायेनपृच्छतः
जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोक आचरेत् ११० ॥

---

१ धन्य हैं वे महात्मा पुरुष जो इन्द्रियों का निग्रह करते हैं जो लोग केवल नाम के ब्राह्मणों को दही पेड़े खिला के सिद्धि को ढूंढते हैं उन्हें मनुजी के इस वचन को अच्छी तरह पढ़ना चाहिये ।

२ अर्थात् सांसारिक वस्तुकी इच्छा करना वृथा है ।

३ अर्थात् स्वभाव का दुष्ट होना बहुतही बुरा है इस लिये मनुष्य अपना स्वभाव अच्छा रखने का बड़ा यत्न करे ।

(३५) द्रव्य वन्धु वय कर्म विद्या ये पांच मान्यके स्थान हैं इसमें पूर्व पूर्व से उत्तर उत्तर वड़ा है ॥ १३६ ॥ *

(४२) वर्ष और केशका पकना द्रव्य और सम्वन्ध इनसवों से मनुष्य वड़ा नहीं होता ऋषीलोगोंने यही धर्म कहाहै कि हम सवमें पढ़ानेवाला जो है सोई वड़ा है ॥ १५४ ॥

(४३) केश के पकनेसे वृद्ध नहीं कहलाता है युवा है और पढ़ाहै तो उसको देवताओंने वृद्ध कहाहै ॥ १५६ ॥

(४९ व ५०) अवटन काजल जूता छाता काम क्रोध लोभ नांच गीत वाजा जूआ झगड़ा परायेका झूठा दोप कहना स्त्रियों को देखना उनसे मिलना परायेका नाश इन सव वातों से वचा रहे ॥ १७८ व १७९ ॥

(६२) मनुष्योंको दूपित करना यह नारियों का स्वभावही है इसलिये पण्डित लोग नारीके विपयमें सावधानता से रहते हैं ॥ २१२ ॥

---

(३५) वित्तम्वन्धुर्वयःकर्म्म विद्याभवतिपञ्चमी।
एतानिमान्यस्थानानि गरीयोयद्यदुत्तरम् ॥१३६॥

(४२) नहायनैर्नपलितैर्न वित्तेननवन्धुभिः।
ऋपयश्चक्रिरेधर्म्मं योनूचानःसुनोमहान् ॥१५४॥

(४३) नतेनवृद्धोभवति येनास्यपलितंशिरः।
योवैयुवाप्यधीयानस्तन्देवाःस्थविरम्विदुः ॥१५६॥

(४९) अभ्यंगमञ्जनञ्चाक्ष्णो रुपानच्छत्रधारणम्।
कामंक्रोधञ्चलोभञ्च नर्तनंगीतवादनम् ॥ १७८ ॥

(५०) द्यूतञ्चजनवादञ्च परिवादन्तथाऽनृतम्।
स्त्रीणांचप्रेक्षणालम्भ मुपघातम्परस्यच ॥ १७९ ॥

(६२) स्वभावएपनारीणां नराणामिहदूपणम्।
अतोर्थान्नप्रमाद्यन्ति प्रमदासुविपश्चितः ॥२१३॥

---

* अर्थात् विद्या सव से वड़ी है और विद्यावान पुरुष सव से अधिक मान्यहै।

(६४) काम क्रोध सहित हो पंडित हो चाहे मूर्ख हो उसे निषिद्ध राहपर ले जानेको स्त्री समर्थ है॥ २१४ ॥

(७०) मनुष्यके उत्पत्ति समयमें जो क्लेश माता पिता सहते हैं उससे मनुष्य सौ वर्ष में भी उरिण नहीं हो सकता (इसलिये) ये देवतारूप हैं इनका अपमान कदापि न करना चाहिए ॥ २२७ ॥ *

(७१) माता पिता आचार्य्य इन तीनों का प्रिय नित्यही करना इन तीनोंके संतुष्ट होनेसे सवतपस्या पूरी होजातीहै२२८॥

(७२) इन्हीं तीनोंकी सेवा परमतपहै इन्होंकी आज्ञा विना कोई दूसरा धर्म्म नहीं करना ॥ २२९ ॥

(७३) तीनों लोक तीनों आश्रम तीनों वेद तीनों अग्नि येही तीनों हैं ॥ २३० ॥

(७४) जिस मनुष्य ने इन तीनों का आदर किया उसके सब धर्म्म आदरको पाचुके और जिस मनुष्यने इन तीनोंका आदर नहीं किया उसकी सब क्रिया निष्फल हुई ॥ २३४ ॥

(६४) अविद्वांसमलंलोके विद्वांसमपिवापुनः ।
प्रमदाह्युत्पथन्नेतुङ्कामक्रोधवशानुगम् ॥ २१४ ॥

(७०) यम्मातापितरौक्लेशं सहेतेसम्भवेनृणाम् ।
नतस्यनिष्कृतिःशक्या कर्तुम्वर्षशतैरपि ॥ २२७ ॥

(७१) तयोर्नित्यम्प्रियंकुर्य्यादाचार्य्यस्यचसर्वदा ।
तेष्वेवत्रिषुतुष्टेषु तपःसर्वंसमाप्यते ॥ २२८ ॥

(७२) तेषांत्रयाणांशुश्रूषा परमन्तपउच्यते ।
नतैरभ्यननुज्ञातो धर्म्ममन्यंसमाचरेत् ॥ २२९ ॥

(७३) तएवहित्रयोलोकास्तएवत्रयआश्रमाः ।
तएवहित्रयोवेदास्तएवोक्तास्त्रयोग्नयः ॥ २३० ॥

(७४) सर्वेतस्यादृताधर्म्मा यस्यैतेत्रयआदृताः ।
अनादृतास्तुयस्यैते सर्वास्तस्याफलाःक्रियाः॥२३४॥

* धन्य हैं वे लोग जो इन वचनों को याद रख के माता पिता की सेवा करते हैं ।

(७५) जब तक ये तीनों जीते रहें तब तक स्वतंत्र होकर दूसरा धर्म्म न करे इन्हीं की सेवा और इन्हींके हित और प्रियको करता रहे ॥ २३५ ॥

(७६) श्रद्धा करके विद्या नीचसे भी लेनी और परमधर्म्म चंडालसे भी लेना और स्त्री रत्न दुष्ट कुलसे भी लेना ॥२३८॥

(७८) स्त्री रत्न विद्या धर्म पवित्रता सुंदरवचन और नाना प्रकारकी कारीगरी इनसबको जहांसे मिले वहांसे लेना॥२४०॥

तृतीय अध्याय

(८१) जिस कुल में स्त्रियों का आदर होता है उस कुल में देवता रमण करते हैं और जहां स्त्रियों का आदर नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल होती हैं ॥ ५६ ॥ (क)

(८२) जिस कुलमें स्त्री दुख पाती हैं वह कुल झटपट नष्टहो जाता है और जिस कुलमें स्त्री दुख नहीं पाती हैं वह कुल सदा बढ़ता है ॥ ५७ ॥

---

(७५) यावत् त्रयस्ते जीवेयुस्तावन्नान्यं समाचरेत् ।
तेष्वेव नित्यं शुश्रूषांकुर्य्यात्प्रियहितेरतः ॥ २३५ ॥

(७६) श्रद्दधानः शुभांविद्यामाददीतावरादपि ।
अन्त्यादपि परन्धर्म्मं स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ २३८ ॥

(७८) स्त्रियोरत्नान्यथोविद्याधर्म्मः शौचंसुभाषितम् ॥
विविधानि च शिल्पानि समादेयानिसर्वतः ॥२४०॥

(८१) यत्रनार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥५६॥

(८२) शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ ५७ ॥

(क) अर्थात् स्त्रियों का अपमान कदापि न करना चाहिये।

चतुर्थ अध्याय

(९६) परम संतोषको पाके सुखार्थी संयम (अर्थात् इन्द्रिय-निग्रह) करे क्योंकि सुख की जड़ संतोषहै दुख की जड़ असंतोष है ॥ १२ ॥

(९७) इच्छा से रूप रस गंध स्पर्श शब्द सब में प्रसक्त न होवे इन सब में अति प्रसक्ति को मनसे निवृत्ति करे ॥ १६ ॥

(१०४) सत्य बोलना प्रिय बोलना सत्य भी हो और प्रिय न हो तो उस को न बोलना प्रिय भी हो और सत्य न हो तो उसको भी न बोलना यह नित्य धर्म है ॥ १३८ ॥

(१११) क्रोध पाके दूसरे के मारने के लिये लाठी न चलावे और न दूसरे को किसी प्रकार से मारे परंतु पुत्र और शिष्य इन दोनों को सिखाने के लिये ताड़ना करे ॥ १६४ ॥ (क)

(११२) अधर्म शीघ्र ही नहीं फलता गौ (अर्थात् पृथ्वी) की नाईं (जैसे पृथ्वी बीज बोने से शीघ्र फल नहीं देती किन्तु काल पाके देती है) अधर्म करनेवाले का धीरे धीरे सर्वनाश हो जाता है ॥ १७२ ॥—

(९६) सन्तोषम्परमास्थाय सुखार्थीसंयतो भवेत।
सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्य्ययः ॥ १२ ॥

(९७) इन्द्रियार्थेषु सर्वेषु न प्रसज्जेत कामतः।
अतिप्रसक्तिञ्चैतेषाम्मनसा सन्निवर्तयेत् ॥ १६ ॥

(१०४) सत्यम् ब्रूयात्प्रियम् ब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियञ्च नानृतम् ब्रूयादेषधर्म्मस्सनातनः ॥ १३८ ॥

(१११) परस्य दण्डन्नोद्यच्छेत् क्रुद्धोनैनं निपातयेत्।
अन्यत्र पुत्राच्छिष्याद्वाशिष्ट्यर्थन्ताडयेत्तुतौ ॥ १६४ ॥

(११२) नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलतिगौरिव।
शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ १७२ ॥

(क) काशी के कितने ही हिन्दुओं ने इस का अर्थ विपरीत समझ रक्खाहै क्योंकि उनका कर्म्म विपरीत दिखलाई देताहै पंडितों को चाहिये कि इन महापुरुषोंको सीधा अर्थ समझा देवें।

(११३) अधर्म करनेवाला पहिले बढ़ता है फेर कल्याण को देखता है फेर शत्रुओंको जीतता है पश्चात् मूल सहित नष्ट हो जाता है ॥ १७४ ॥ (क)

(११४) भले लोगों का आचार सत्य धर्म पवित्रता इन सब में सर्वकाल रति करे भार्या पुत्र दास छात्र इन सब को धर्म से शासन (अर्थात् ताड़न) करे वाणी बाहु उदर इनका संयम करे (वाणी का संयम सत्य भाषण से होताहै बाहु के बलसे किसी को पीड़ा न देवे तब बाहु का संयम होता है जो कुछ थोड़ासा मिल जाय उसी के भोजन से संतुष्ट रहने से उदर का संयम होता है ॥ १७५ ॥

(१२६) किसी जीव को पीड़ा न होने पावे ऐसी रीति से परलोक के सहाय के लिये धर्म को बटोरे जैसे दीमक वल्मीक (अर्थात्) अपनी बांबी को बटोरती है ॥ २३८ ॥

(१२७) माता पिता पुत्र भार्या जाति ये सब परलोकमें सहाय के लिये नहीं रहते केवल धर्म ही रहता है ॥ २३९ ॥

(१२८) अकेलाही उत्पन्न होता है अकेलाही नष्ट होता है अकेलाही सुकृत (अर्थात् पुण्य) को भोग करताहै अकेलाही दुष्कृत (अर्थात् पाप) को भोगता है ॥ २४० ॥

---

(११३) अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
तत: सपत्नान् जयतिसमूलस्तु विनश्यति ॥१७४॥

(११४) सत्यधर्मार्य्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्सदा।
शिष्यांश्चशिष्याद्धर्म्मेणवाग्बाहूदरसंयतः॥१७५॥

(१२६) धर्म्मं शनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्तिका।
परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ २३८ ॥

(१२७) नामुत्रहि सहायार्थम्पितामाता च तिष्ठतः।
न पुत्रदारन्न ज्ञातिर्धर्म्मस्तिष्ठति केवलः ॥२३९॥

(१२८) एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एवच दुष्कृतम् ॥ २४० ॥

(क) अर्थात् अधर्म करनेवाला चाहे जितना बढ़े परन्तु अन्त उस का बुरा है मूलसहित नष्ट होजावेगा।

(१२९) काठ और ढेले के सदृश मृत शरीर को पृथ्वी पर त्याग करके बांधव लोग सब मुंह फेर लेते हैं परन्तु धर्म उस के पीछे २ लगा चला जाता है ॥ २४१ ॥

(१३०) इसलिये सहाय के अर्थ नित्यही धीरे २ धर्म को बटोरे धर्म की सहायता से दुस्तर नरक को तरताहै ॥ २४२ ॥

(१३१) दृढ़कारी अर्थात् जिस क्रियाका आरंभ किया उस को समाप्त करनेवाला कोमल स्वभाववाला शीत घाम आदि जो दुख हैं उनको सहनेवाला इन्द्रियों को विषयों से रोकनेवाला क्रूराचारवाले पुरुषों के साथ सम्बन्ध को छोड़देनेवाला हिंसा से निवृत्त रहनेवाला दान करनेवाला स्वर्गको पाताहै ॥२४६॥

पंचम अध्याय

(१३८) जल से शरीर सत्य से मन ब्रह्म विद्या और तप से भूतात्मा (अर्थात् लिंग शरीर सहित जीवात्मा) ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है ॥ १०९ ॥

षष्ठम अध्याय

(१४४) (धरतीपर) देखके पांव रखे जल को कपड़े से छान के पीये सत्य करके पवित्र वाणी को बोले मन पवित्र रखके सारे काम करे ॥ ४६ ॥

---

(१२९) मृतंशरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ ।
विमुखा बान्धवायान्ति धर्म्मस्तमनुगच्छति॥२४१॥

(१३०) तस्माद्धर्म्मं सहायार्थन्नित्यं सञ्चिनुयाच्छनैः ।
धर्म्मेणहिसहायेन तमस्तरति दुस्तरम् ॥ २४२ ॥

(१३१) दृढ़कारी मृदुर्दान्तः क्रूराचारै रसम्वसन् ।
अहिंस्रो दमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गन्तथाव्रतः॥२४६॥

(१३८) अद्भिर्गात्राणिशुध्यन्ति मनस्सत्येनशुध्यति ।
विद्यातपोभ्याम्भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेनशुध्यति॥१०९॥

(१४४) दृष्टिपूतन्न्यसेत्पादम्वस्त्रपूतञ्जलम्पिवेत् ।
सत्यपूताम्वदेद्वाचम्मनः पूतंसमाचरेत् ॥ ४६ ॥

(१४५) दूसरे मनुष्योंकी बुरी वाणी को सहे किसीका अपमान न करे किसी से वैर न करे ॥ ४७ ॥

(१४६) अपने ऊपर कोई क्रोध भी करे तो उस पर आप क्रोध न करे अपनी निन्दा भी कोई करे तो आप उससे अच्छी वाणीसे बोले सप्तद्वारसे निकलेहुए वचनको अनृतनबोले ॥४८॥

(१४७) इन्द्रियोंका निरोध राग द्वेषका क्षय अर्थात् त्याग सब जीवोंकी अहिंसा इन से मनुष्य मोक्ष के योग्य होता है ॥ ६० ॥

(१५०) धर्म के दस लक्षण कहते हैं १ धृति (अर्थात् संतोष) २ क्षमा (अर्थात् किसीसे अपकार पाकर उसका अपकार न करना और बुराई के पलटे भलाई करना) ३ दम (अर्थात् विकार करनेवाला विषय पाकर मनमें विकार न होने देना) ४ चोरी का त्याग ५ पवित्रता ६ विषयों से इन्द्रियोंका रोकना ७ शास्त्र आदि का तत्त्वज्ञान ८ आत्मज्ञान ९ सत्य १० क्रोधका हेतु रहते भी क्रोध न करना ॥ ९२ ॥

सप्तम अध्याय

(१५३) रात्रि दिन इन्द्रियों के जीतने में उद्योग करे जितेंद्रिय राजा संपूर्ण प्रजाको अपने वसमें रख सकता है ॥ ४४ ॥ (क)

(१४५) अतिवादांस्तितिक्षेत नावमन्येतकञ्चन ।
न चेमन्देहमाश्रित्य वैरंकुर्वीतकेनचित् ॥ ४७ ॥

(१४६) क्रुध्यन्तन्नप्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलम्वदेत् ।
सप्तद्वारावकीर्णाञ्च न वाचमनृताम्वदेत् ॥ ४८ ॥

(१४७) इन्द्रियाणान्निरोधेन रागद्वेषक्षयेनच ।
अहिंसयाचभूतानाममृतत्वायकल्पते ॥ ६० ॥

(१५०) धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ ९२ ॥

(१५३) इन्द्रियाणाञ्जयेयोगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ।
जितेन्द्रियोहिशक्नोतिवशेस्थापयितुम्प्रजाः ॥ ४४ ॥

(क) खेद की बातहै कि पण्डितलोग दान दक्षिणा मिलने की कथा तो नित्य सुनाया करतेहैं परंतु ऐसे२ श्लोक हमारे राजामहाराजों को कभी नहीं समझाते।

(१५५) काम से उत्पन्न वस्तु में प्रसक्त होने से राजा धर्म और अर्थ से रहित होता है और क्रोध से उत्पन्न वस्तु में प्रसक्त होने से तो आपही नष्ट हो जाता है ॥ ४६ ॥

(१५६) अहेर और पासे का खेलना दिन में सोना पर का दोष कहना स्त्री की सेवा सुरापान नाचना गाना बजाना वृथा घूमना ये दस काम से उत्पन्न हैं ॥ ४७ ॥ (क)

(१५७) किसी का दोष किसी से कहना बलसे काम करना कपट से वध दूसरे के गुण को न सहना पर के गुण में दोष निकालना अर्थको चुराना अथवा देनेयोग्य वस्तु को न देना वाणी से कठोर बोलना दंड से ताड़न करना ये आठ क्रोध से उत्पन्न हैं ॥ ४८ ॥

(१५८) दोनों गणों का मूल लोभ है उसको यत्न से जीतना इसके जीतनेसे दोनोंगणजीतेहैं इसबातको कवियोंने कहाहै॥४९॥

अष्टम अध्याय

(१६१) या तो सभा में जाना ही नहीं और जो जाना तो यथार्थ ही बोलना जान के न बोले अथवा विरुद्ध बोले तो पापी है ॥ १३ ॥ (ख)

(१५५) कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः।
वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तु ॥४६॥

(१५६) मृगयाक्षोदिवा स्वप्नः परिवादः स्त्रियोमदः।
तौर्यत्रिकं वृथाट्याच कामजो दशकोगणः॥४७॥

(१५७) पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्या सूयार्थदूषणम्।
वाग्दण्डञ्च पारुष्यं क्रोधजोपि गणोऽष्टकः॥४८॥

(१५८) द्वयोरप्येतयोर्मूलं यंसर्वे कवयो विदुः।
तं यत्नेनजयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ ॥ ४९ ॥

(१६१) सभावानप्रवेष्टव्या वक्तव्यम्वासमञ्जसम्।
अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरोभवति किल्बिषी ॥ १३ ॥

(क) क्या अच्छी बात होती जो हमारे देश के राजा लोग अपनी बड़ी बड़ी मुहरों में इस श्लोकको खुदवालेते और सदा उसके अर्थ को चिन्तन करते रहते।

(ख) अर्थात् झूठ कभी न बोले और काम पड़ने पर सत्य को कभी न छुपावे।

(१६२) जहां अधर्म से धर्म और,असत्य से सत्य मारा जाता है और देखनेवाले उसको निवारण नहीं करते तहां सभासद भी मारे गये हैं ॥ १४ ॥

(१६३) एक धर्म ही मित्र है क्योंकि वह मरे पीछे भी साथ जाता है और बाकी तो सब शरीर के साथ ही नष्ट होते हैं (कदाचित् कहो कि मरे पीछे तो अधर्म भी साथ जाता है तो वह भी मित्र होना चाहिये तिस का समाधान यह कि धर्म इष्टफल देने के लिये जाता है और अधर्म अनिष्टफल देने के लिये जाता है तो जो इष्टफल देने के लिये जाय सोई मित्र कहलाता है और भार्या पुत्र आदि तो शरीर के साथ ही छूट जाते हैं इसलिये पुत्र आदि में स्नेह करके धर्म को न मारना ॥ १७ ॥

नवम अध्याय

(१८४) काम करते करते थकजावे तो फेर भी कामों का आरम्भ करता ही रहे क्योंकि काम करने वालों की सेवा लक्ष्मी करती है ॥ २०० ॥ (क)

एकादश अध्याय

(१९४) साक्षी होके झूठ बोलनेमें गुरुको मिथ्या दोप लगाने

---

(१६२) यत्र धर्म्मो ह्यधर्म्मेण सत्यंयत्रानृतेन च ।
हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः ॥ १४ ॥

(१६३) एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातियः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति ॥ १७ ॥

(१८४) आरभेतैव कर्म्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः ।
कर्म्माण्यारभमाणंहि पुरुषं श्रीर्निषेवते ॥ ३०० ॥

(१९४) उक्त्वा चैवानृतं साक्ष्ये प्रतिरुध्यगुरुन्तथा ।
अपहृत्य च निःक्षेपं कृत्वा च स्त्री सुहृद्वधम् ॥ ८९ ॥

(क) अर्थात् काम करनेसे कभी न घबरावे चाहे वह सिद्ध हो चाहे न हो काम करताही रहे यदि हमारे देशवाले इसवचनके अनुसार चलते और आलसी और निरुद्यमी न होजाते तो आज इस दशा को क्यों पहुंचते ।

में धरोहर मारनें में स्त्री के वध में और मित्रके बध में (ब्रह्मह-त्या का व्रत करना) ॥ ८९ ॥ (क)

द्वादश अध्याय

(१९५) जिसकी वाणी मन शरीर ये सब क्रम से निषिद्ध कथन असत्संकल्प निषिद्ध व्यापार इनका त्याग कियेहुएहैं वही त्रिदण्डी कहलाता है क्योंकि दमन से दण्ड है तो जिसने तीनों से तीनों वस्तुका दमन किया वही त्रिदण्डी है ॥ १० ॥

(१९६) संपूर्ण जीवों में इन तीनों दण्डों (अर्थात् मनोदण्ड कायदण्ड वाणीदण्ड) का स्थापन करके और काम क्रोध को रोकके सिद्धिको पाता है ॥ ११ ॥

॥ इति ॥

---

(१९५) वाग्दण्डोथमनोदण्डः कायदण्डस्तथैवच ।
यस्यैतेनिहिताबुद्धौ त्रिदण्डीतिसउच्यते ॥ १० ॥
(१९६) त्रिदण्डमेतन्निक्षिप्य सर्वभूतेषुमानवः ।
कामक्रोधौतुसंयम्य ततस्सिद्धिंनियच्छति ॥११॥

(क) अर्थात झूठी साक्षी देना इत्यादि पाप ब्रह्महत्या के बराबर हैं ।

निवेदन

राजाशिवप्रसाद सितारेहिन्दका।

पढ़नेवाले इसमें जो कुछ अशुद्ध पावें नीचे लिखा नक़्शाभरके ग्रन्थकर्ता के पास भेजदें दूसरी बार छपने में शुद्ध करदिया जावेगा—

नाम	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध

नीचे लिखी हिन्दी और उर्दू पुस्तकों का "कापीराइट" ग्रन्थकर्त्ता ने अपने मित्र मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) को देदियाहै उनसे मंगावें॥

हिन्दी:—

१ भूगोलहस्तामलक। प्रथम द्वितीय तृतीयभाग२ छोटा भूगोलहस्तामलक ३ इतिहासतिमिरनाशक। (तीन खण्डों में)। ४ हिन्दीव्याकरण। ५ ग्रामाभनरंजन। ६ गुटका (तीनखण्डोंमें)। ७ मानवधर्म्मसार। ८ अंगरेज़ी समेत। ९ सिक्खोंकाउदय अस्त। १० वर्णमाला। ११ विद्यांकुर। १२ इक्षयम्योधउर्दू। १३ अंगरेज़ी अक्षरों के सीखने का उपाय। १४ राजाभोजका सुपना। १५ आलसियोंका कोड़ा। १६ निवेदन। (दयानन्दी)। १७ मोहमुद्गर। १८ जैन औरबौद्धकाभेद। १९ भाषाकल्पसूत्र। २० प्रेमरत्न। २१ गीतगोविंदादर्श। २२ लीलावतीभाषा। २३ प्रश्नोत्तरमाला। २४ क़िस्सासैण्डफ़ोर्ड व मर्टन(तीन हिस्से)॥ २५ कल्पभाष्य। २६ उपनिषद्सार॥

उर्दू:—

१ जामिजहांनुमा (चार जिल्दों में)। २ छोटा। ३ आइने तारीख़नुमा (तीनहिस्सों में)। ४ सर्फ़ वनह्व (उर्दू)। ५ सर्फ़वनह्व (फ़ारसी) (दिलबहलाव (तीन हिस्स में)। ७ क़िस्से सैंडफ़ोर्ड व मर्टन। ८ मज़ामीन ९ सिक्खोंका तुलू और गुरूब। १० कुछ बयान अपनी ज़ुबानका। ११ चमेली और गुलाब का क़िस्सा। १२ सच्चीबहादुरी। १३ मिक़र अतुलकारिहीन। १४ हक़ादकुल मौजूदात। १५ हुरूफ़तहज्जी। १६ हालात हिनरी लारेंटक्कर कमिश्नर। १७ क़िस्सा सैंडफ़ोर्ड व मर्टन तीनोंहिस्से अलगर॥ १८ लेक्चर ज्ञान व कर्म्म। १९ बच्चोंका इनाम। २० आज़मगढ़ रीडर।